CORPORATE OFFICE
Delhi Office
706 Ground Floor Dr. Mukherjee Nagar Near Batra Cinema Delhi – 110009
Noida Office
Basement C-32 Noida Sector-2 Uttar Pradesh 201301

CURRENT AFFAIRS

Yojna IAS
yojnaias.com
योजना है तो सफलता है

website : www.yojnaias.com
Contact No. : +91 8595390705

दिनांक: 13 जनवरी 2024

राजकोषीय समेकन : प्रत्यक्ष कर – संग्रह लक्ष्य की ओर बढ़ता भारत और मजबूत राजस्व – प्रणाली

स्त्रोत – द हिन्दू , आर्थिक सर्वेक्षण 2022 – 23, बजट 2023 – 24 एवं पीआईबी।
सामान्य अध्ययन – भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास, प्रत्यक्ष कर, राजकोषीय घाटे का सकारात्मक एवं नकारात्मक पहलू , राजकोषीय समेकन।

ख़बरों में क्यों ?

- अभी वित्तीय वर्ष 2023-24 में एक चौथाई से भी कम समय बचा है, किन्तु फिर भी केंद्र सरकार ने जनवरी 2024 में ही अपने प्रत्यक्ष कर संग्रह लक्ष्य का लगभग **81%** पूरा कर लिया है। 10 जनवरी 2024 तक प्रत्यक्ष कर संग्रह के मुकाबले 14.7 लाख करोड़ रुपये का प्रत्यक्ष कर प्रवाह एक साल पहले की तुलना में 19.4% अधिक है।
- राजस्व विशेषज्ञों और अर्थशास्त्रियों का मानना है कि सरकारी खजाने की शुद्ध प्रत्यक्ष कर राशि बजट अनुमान ₹17.2 लाख करोड़ से लगभग एक लाख करोड़ से अधिक हो जाएगी और इस बार पूरे वर्ष की वृद्धि दर लगभग 18% रहेगी।
- वस्तु एवं सेवा कर – संग्रह प्रवाह के भी बजट गणित को मात देने की संभावना है और केंद्रीय बैंक के उदार लाभांश से गैर-कर राजस्व को बढ़ावा मिलेगा, उत्पाद शुल्क से अपेक्षाकृत कम खपत के बावजूद कुल राजस्व बजट की उम्मीदों से परे जाने की संभावना है।
- प्रत्यक्ष करों के अंतर्गत, कॉर्पोरेट करों में 12.4% की वृद्धि हुई है, जबकि व्यक्तिगत आय करों से 27.3% अधिक राजस्व प्राप्त हुआ है और यह विरोधाभास आने वाले वर्षों में भी जारी रह सकता है। इस मूल्यांकन वर्ष में दाखिल किए गए आयकर रिटर्न की संख्या रिकॉर्ड स्तर (31 दिसंबर तक 8.2 करोड़) तक पहुंच जाएगी। .
- स्वस्थ राजस्व वृद्धि और कर दाखिल करने के आधार का सराहनीय विस्तार सरकार की राजकोषीय समेकन की उम्मीदों को आगे बढ़ने में कुछ राहत प्रदान करता है, इस आशंका के बीच कि इस वर्ष सकल – घरेलू उत्पाद का 5.9% घाटा लक्ष्य में एक छोटा सा अंतर रह सकता है।
- यह कॉरपोरेट्स और व्यक्तियों के लिए इसे और अधिक सरल बनाने पर ध्यान देने के साथ केंद्र के लिए कराधान में और अधिक सुधार करने की गुंजाइश भी बनाता है। उदाहरण के लिए – कंपनियों के लिए अनेक विदहोल्डिंग कर – दरें, जो अक्सर विवादों का कारण बनती हैं, को एक नहीं तो कुछ कम दरों तक कम किया जा सकता है।
- कर – कटौती और स्रोत पर संग्रह (टीडीएस और टीसीएस) दरों, जिसमें विदेशी खर्चों पर नज़र रखने के लिए बहु-विवादित लेवी भी शामिल है, को कुछ हद तक नीचे लाया जा सकता है और मौजूदा कर – दरों के बावजूद – कर अधिकारी उनसे खुफिया जानकारी प्राप्त करना जारी रख सकते हैं।
- कम – दरों और कागजी कार्रवाई के साथ नई छूट-रहित व्यक्तिगत आयकर व्यवस्था का चलन बढ़ रहा है। फिर भी, सरकार लोगों को सार्वजनिक नीति लक्ष्यों के अनुरूप बेहतर जीवन विकल्पों के लिए प्रेरित करने के लिए कुछ तंत्रों पर विचार कर सकती है जो वित्तीय बाजारों को भी गहरा कर सकते हैं और मैक्रो-बुनियादी सिद्धांतों को मजबूत कर सकते हैं – उदाहरण के लिए सेवानिवृत्ति बचत और स्वास्थ्य बीमा को प्रोत्साहित करना।

- स्वास्थ्य बीमा पर 18% जीएसटी लेवी पर भी पुनर्विचार किया जाना चाहिए, भले ही जीएसटी दरों के व्यापक युक्तिकरण की प्रतीक्षा की जा रही है, क्योंकि इसमें निम्न और मध्यम आय वाले परिवारों के लिए महत्वपूर्ण लागत शामिल है, जिससे उनके एक सदस्य के लिए भी स्वास्थ्य देखभाल संकट का खर्च उन्हें गरीबी में जाने का वास्तविक जोखिम का सामना करना पड़ता हैं।
- वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने संकेत दिया है कि अंतरिम बजट 2024-25 में कोई शानदार कदम नहीं होगा, इसलिए 2019 के चुनाव पूर्व अभ्यास की पुनरावृत्ति की संभावना नहीं है कि आयकर स्लैब में फेरबदल किया जाए। लेकिन राजस्व उछाल से नीति – निर्माताओं को नई सरकार के विचार के लिए और अधिक सुधार विकल्प की ओर ध्यान रखने के लिए उत्साहित होना चाहिए।

उभरती अर्थव्यवस्था के लिए राजकोषीय समेकन का महत्त्व :

- एक सरकार आमतौर पर **घाटे को कम करने के लिए कर्ज़ लेती है।** इसके बाद उसे कर्ज चुकाने के लिये अपनी कमाई का एक हिस्सा आवंटित करना होता है। राजकोषीय समेकन से तात्पर्य **राजकोषीय घाटे को कम करने के तरीकों और साधनों से है।** कर्ज़ बढ़ने के साथ ब्याज का बोझ बढ़ता है। वित्त वर्ष **2022 के बजट में 34.83 लाख करोड़ रुपए से अधिक के कुल सरकारी व्यय में से 8.09 लाख करोड़ रुपए (लगभग 20%) से अधिक ब्याज के भुगतान में खर्च हो गया।**

केन्द्र सरकार द्वारा राजकोषीय समेकन की दिशा में उठाए गए प्रमुख पहल :

सब्सिडी में कमी करना :

- केंद्र सरकार ने **भोजन, पेट्रोलियम और उर्वरक सब्सिडी हेतु आवंटित राशि को कम कर दिया** है।
- वर्ष 2022-23 (संशोधित अनुमान) में खाद्य सब्सिडी 2,87,194 करोड़ रुपए थी जिसे वित्त वर्ष 2023-24 में घटाकर 1,97,350 करोड़ रुपए कर दिया गया है।
- वित्त वर्ष 2022-23 में उर्वरक सब्सिडी 2,25,220 करोड़ रुपए (अनुमानित) थी जिसे वित्त वर्ष 2023-24 में घटाकर 1,75,100 करोड़ रुपए कर दिया गया है।
- वित्त वर्ष 2022-23 में पेट्रोलियम सब्सिडी 9,171 करोड़ रुपए (अनुमानित) थी जिसे वित्त वर्ष 2023-24 (बजट अनुमान) में घटाकर 2,257 करोड़ रुपए किया गया है।
- पिछले वर्ष की तुलना में सब्सिडी में कमी उतनी तीव्र नहीं है, लेकिन यह अब भी वर्ष 2025-26 तक 4.5% के राजकोषीय घाटे के लक्ष्य तक पहुँचने की दिशा में एक सकारात्मक कदम है।

सकल घरेलू उत्पाद के लिए पूंजीगत व्यय को बढ़ाना :

- वर्ष 2023-24 के बजट में **पूंजीगत व्यय** को **सकल घरेलू उत्पाद के 3.3%** तक बढ़ाने की योजना बनाई गई है और सरकार ने **विकास को बढ़ावा देने के लिए राज्यों को 50 वर्षों के लिए 1.3 लाख करोड़ रुपए का ब्याज मुक्त ऋण** प्रदान किया है।

ऋण प्रबंधन में बदलाव :

- अधिकांश राजकोषीय घाटे को आंतरिक बाज़ार ऋण के माध्यम से वित्तपोषित किया जाता है और एक छोटा हिस्सा बचत, भविष्य निधि तथा बाहरी ऋण के बदले प्रतिभूतियों से आता है।
- वर्ष 2023 के केंद्रीय बजट में भारत का बाहरी ऋण कुल राजकोषीय घाटे का केवल 1% है, यह अनुमानतः 22,118 करोड़ रुपए है।
- **राज्य अपने सकल राज्य घरेलू उत्पाद (GSDP)** के 3.5% के राजकोषीय घाटे को बनाए रखने के लिए स्वतंत्र हैं, जिसमें 0.5% बिजली क्षेत्र के सुधारों के लिए है।

राजकोषीय घाटा का तात्पर्य/ परिचय :

- किसी भी सरकार द्वारा प्राप्त कुल – राजस्व (उधार को छोड़कर) और उसके कुल – व्यय के बीच के अंतर को **' राजकोषीय घाटा '** कहा जाता है।
- इसे देश के **सकल घरेलू उत्पाद (GDP)** के प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया जाता है। यह एक संकेतक है जो दर्शाता है कि सरकार को अपने कार्यों को वित्तपोषित करने के लिए किस सीमा तक उधार लेना चाहिए।
- **मुद्रा का मूल्यह्रास और मुद्रास्फीति, ऋण स्तर में वृद्धि,** कर्ज़ के बोझ में वृद्धि का कारण बन सकता है।
- **कम राजकोषीय घाटा राजकोषीय प्रबंधन और सुचारू अर्थव्यवस्था के सकारात्मक संकेत होते हैं।**

भारत – सरकार के राजकोषीय नीति- निर्धारण के प्रमुख उपकरण का परिचय :

भारत सरकार के राजकोषीय नीति – निर्धारण के प्रमुख उपकरण निम्नलिखित है –

सरकारी खर्च – सरकारी खर्च को समायोजित करके आर्थिक उत्पादन को प्रभावित किया जा सकता है। सरकारी व्यय में समुदाय के लाभ के लिए वस्तुओं और सेवाओं को प्राप्त करना शामिल है, इसे सरकारी अंतिम उपभोग व्यय के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। भविष्य में लाभ पैदा करने के उद्देश्य से अनुसंधान गतिविधियों, बुनियादी ढांचे पर सरकारी खर्च को सरकारी सकल पूंजी निर्माण के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

स्थानांतरण भुगतान – इसका उपयोग सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों, छात्र अनुदान और सामाजिक सुरक्षा के माध्यम से व्यक्तियों को सरकारी भुगतान का वर्णन करने के लिए किया जाता है।

कर – कर एक राजकोषीय नीति उपकरण है क्योंकि करों में परिवर्तन औसत उपभोक्ता की आय को प्रभावित करता है, और उपभोग में परिवर्तन से वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद में परिवर्तन होता है। इसलिए, करों को समायोजित करके सरकार आर्थिक उत्पादन को प्रभावित कर सकती है। करों को कई तरीकों से बदला जा सकता है।

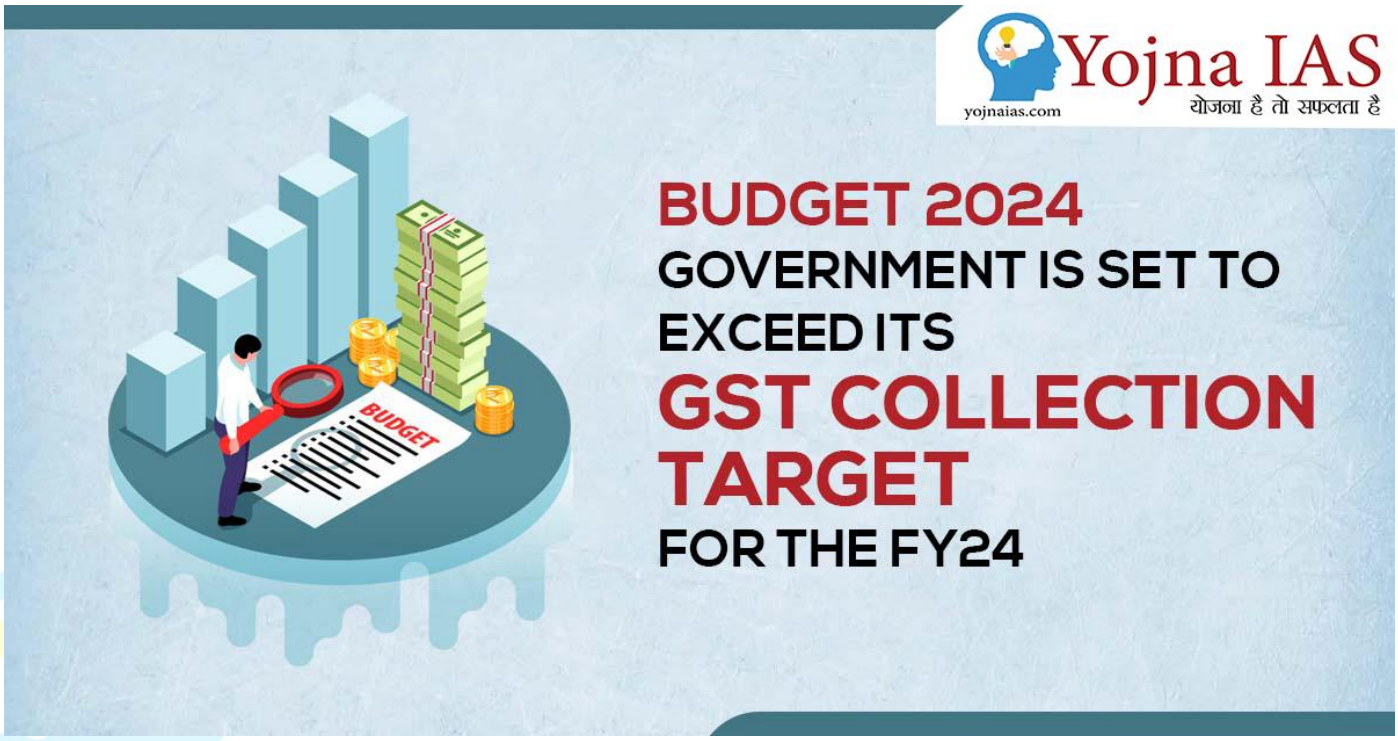

राजकोषीय घाटे के सकारात्मक पहलू :

- **सरकारी खर्च में वृद्धि :** सरकार को **सार्वजनिक सेवाओं, बुनियादी ढाँचे और अन्य महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों पर खर्च बढ़ाने** में राजकोषीय घाटा सक्षम बनाता है जो आर्थिक विकास के लिए काफी सहायक साबित हो सकते हैं।
- **दीर्घकालिक निवेशों का वित्तपोषण :** राजकोषीय घाटे के माध्यम से बुनियादी **ढाँचागत परियोजनाओं** जैसे दीर्घकालिक निवेशों को सरकार वित्तपोषित कर सकती है।
- **बेरोजगारी को कम करने और रोज़गार सृजन में सहायक :** सरकारी व्यय में वृद्धि से बेरोजगारी को कम किया जा सकता है और देश में रोजगार का सृजन हो सकता है, जो **बेरोजगारी को कम करने और लोगों के जीवन स्तर को ऊँचा करने में मदद कर सकता है।**

राजकोषीय घाटे के नकारात्मक पहलू :

- **कर्ज़ का बढ़ता बोझ :** लगातार उच्च राजकोषीय घाटा **सरकारी ऋण में वृद्धि** को दर्शाता है, जो भविष्य की पीढ़ियों पर कर्ज़ चुकाने का दबाव डालता रहता है।
- **मुद्रास्फीति में दबाव उत्पन्न होना :** बड़े राजकोषीय घाटे से धन की आपूर्ति में वृद्धि और उच्च मुद्रास्फीति की स्थिति उत्पन्न हो सकती है, जिससे **आम जनता की क्रय शक्ति कम हो जाती है।**

- **निजी निवेश में कमी :** सरकार को राजकोषीय घाटे को पूरा करने के लिए भारी उधार लेना पड़ सकता है, जिससे ब्याज दरों में वृद्धि हो सकती है और निजी क्षेत्र के लिए ऋण प्राप्त करना मुश्किल हो सकता है, इस प्रकार निजी निवेश में कमी हो सकता है।
- **विदेशी मुद्रा भंडार में कमी और भुगतान संतुलन पर दबाव की समस्या :** यदि कोई देश **बड़े राजकोषीय घाटे** की स्थिति से गुज़र रहा है, तो उसे विदेशी स्रोतों से उधार लेना पड़ सकता है, जिससे उसके विदेशी मुद्रा भंडार में कमी आ सकती है और **भुगतान संतुलन पर दबाव** पड़ सकता है।

भारत में राजकोषीय समेकन में होने वाले घाटों के विभिन्न प्रकार :

प्राथमिक घाटा : ब्याज भुगतान को छोड़कर राजकोषीय घाटे के समान ही **प्राथमिक घाटा** होता है। यह सरकार की व्यय आवश्यकताओं और इसकी प्राप्तियों के बीच के अंतर को बताता है, लेकिन यह पिछले वर्षों के दौरान लिए गए ऋणों पर ब्याज भुगतान हेतु किये गए व्यय को ध्यान में नहीं रखता है।

प्राथमिक घाटा = राजकोषीय घाटा – ब्याज भुगतान

राजस्व घाटा : यह राजस्व प्राप्तियों पर सरकार के राजस्व व्यय की अधिकता को संदर्भित करता है।

राजस्व घाटा = राजस्व व्यय – राजस्व प्राप्तियाँ

प्रभावी राजस्व घाटा : यह पूंजीगत परिसंपत्तियों के निर्माण के लिए राजस्व घाटे और अनुदान के बीच का अंतर होता है।

भारत में रंगराजन समिति द्वारा सार्वजनिक व्यय संबंधी प्रभावी राजस्व घाटे की अवधारणा का सुझाव दिया गया है।

निष्कर्ष :

- पूंजीगत व्यय के माध्यम से अर्थव्यवस्था को उबारना भारत की प्राथमिकता है। बुनियादी ढाँचे में सरकारी निवेश में वृद्धि के साथ **निजी निवेश भी बढ़ेगा, आर्थिक (GDP) विकास को बढ़ावा मिलेगा, परिणामस्वरूप राजकोषीय घाटे के GDP अनुपात में कमी आएगी।**
- सतत दीर्घावधिक विकास के लिए बजट और आर्थिक सर्वेक्षण, दोनों निजी निवेश के सुधार पर केंद्रित है। निवेश को बढ़ाकर और भारत को 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने में सहायता के लिए कर दरों में कटौती की आवश्यकता है। कर की दरों में वृद्धि करने की अपेक्षा राजस्व संग्रहण पर अधिक ज़ोर देने की ज़रूरत है। कर की अधिक दरें एक सीमा तक ही कर में वृद्धि करने में सक्षम हो सकती हैं जैसा कि लाफर वक्र में इंगित है कि इस सीमा के पश्चात् कर संग्रहण में कमी आने लगती है। इससे कर संग्रहण तो कम होता ही है, साथ ही निवेश में भी कमी आती है एवं उद्योग जगत भी नकारात्मक रूप से प्रभावित होता है। यदि सरकार धीरे-धीरे OECD रिपोर्ट के अनुसार करों का तार्किकीकरण करती है तो इससे आने वाले समय में निवेश में वृद्धि होगी जिससे अर्थव्यवस्था को गति मिलेगी एवं कर राजस्व में भी वृद्धि होगी।

प्रारंभिक परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न :

Q.1. राजकोषीय समेकन प्राप्त करने के लिए सरकार द्वारा नियोजित राजस्व और व्यय उपाय के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए।

1. वस्तु एवं सेवा कर (GST)' कई प्राधिकरणों द्वारा एकत्र किये गए विभिन्न करों की जगह लेकर यह भारत में एकल बाज़ार स्थापित करेगा।

2. यह भारत के 'चालू खाता घाटा' को काफी कम कर देगा और इसे अपने विदेशी मुद्रा भंडार को बढ़ाने में सक्षम बनाएगा।
3. यह भारत की अर्थव्यवस्था के विकास और आकार में अत्यधिक वृद्धि करेगा एवं निकट भविष्य में इसे चीन से आगे निकलने में सक्षम बनाएगा।
4. कम राजकोषीय घाटा राजकोषीय प्रबंधन और सुचारू अर्थव्यवस्था के सकारात्मक संकेत होते हैं।

उपरोक्त कथन / कथनों में से कौन सा कथन सही है ?

(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2 , 3 और 4
(C) केवल 1 और 4
(D) इनमें से सभी।

उत्तर – (C)

मुख्य परीक्षा के लिए अभ्यास प्रश्न :

Q.1. चर्चा कीजिए कि केंद्र सरकार द्वारा राजकोषीय समेकन की सुदृढ़ीकरण के लिए कौन से उपाय सुझाए गए हैं ? 15 वें वित्त आयोग की सिफारिशों के आधार पर यह चर्चा कीजिए कि बजट निर्माण के संदर्भ में, लोक व्यय प्रबंधन भारत सरकार के समक्ष किस प्रकार एक चुनौती है ?

Akhilesh kumar shrivastav

Yojna IAS
योजना है तो सफलता है
yojnaias.com